प्रेस विज्ञप्ति

गोविन्द बल्लभ पंत कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय पंतनगर, जिला- ऊधमसिंह नगर (उत्तराखण्ड)

राष्ट्रीय संगोष्ठी में ग्रामीण विकास में सामुदायिक विज्ञान का महत्व किया प्रतिपादित

पंतनगर। 21 अगस्त 2019। पंतनगर विश्वविद्यालय के गृह विज्ञान महाविद्यालय के वस्त्र एवं परिधान विभाग द्वारा 'ग्रामीण विकास में सामुदायिक विज्ञान शिक्षा की भूमिका' विषय पर आयोजित की जा रही दो-दिवसीय संगोष्ठी का उद्घाटन आज रतन सिंह सभागार में हुआ। यह कार्यक्रम भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली, द्वारा प्रायोजित है। इस कार्यक्रम की मुख्य अतिथि उत्तराखण्ड की नागरिक आपूर्ति एवं उपभोक्ता संरक्षण की अतिरिक्त आयुक्त, डा. सुचिस्मिता सेनगुप्ता पाण्डे, के साथ कुलसचिव, डा. ए.पी. शर्मा, विश्वविद्यालय के गृह विज्ञान महाविद्यालय की अधिष्ठात्री, डा. रीता सिंह रघुवंशी; सयोजक, डा. साक्षी; एवं सह-सयोजक, डा. अनीता रानी, मंचासीन थे। इस संगोष्ठी की समन्वयक, वस्त्र एवं परिधान की विभागाध्यक्ष, डा. अल्का गोयल हैं।

डा. ए.पी. शर्मा ने अपने उद्बोधन में कहा कि विश्वविद्यालय की स्थापना ग्रामीण विकास के उद्देश्य से ही की गयी थी। भुखमरी के दौर से गुजर रहे देश में स्थापित इस प्रथम विश्वविद्यालय ने शुरूआती प्रयासों में ही नयी विकसित प्रजातियों से गंगा-सिंधु के मैदान और तराई के क्षेत्र को खाद्यान्न का कटोरो में परिवर्तित कर दिया। उन्होंने बताया कि वर्तमान में विश्व में भारत की अर्थ व्यवस्था ७वें स्थान पर है और सकल घरेलु उत्पाद की वृद्धि दर लगभग 7.0 है। डा. शर्मा ने कहा कि गांव से छोटे कस्बों में पलायन हो रहा है और छोटे कस्बे छोटे शहरों में बदलने की उम्मीद रखते है। कारणवश देश मुख्यतः तीन चुनौतियों का सामना कर रहा है, जिनमें कौशल विकास एवं रोजगार, ग्रामीण क्षेत्रों का आर्थिक व सामाजिक विकास तथा स्वास्थय एवं सतत सम्मिलित हैं। उन्होंने कहा कि भारतवर्ष की आधी से ज्यादा जनसंख्या में भविष्य की आवश्यकता के अनुरूप नयी कौशल सक्षमता विकसित करने की आवश्यकता है, जिसके लिए शैक्षिणक प्रणाली में बदलाव की उन्होंने बात कही। उन्होंने असंगठित क्षेत्र में ज्यादा से ज्यादा रोजगार उत्पन्न/सृजित करना, रोजगार के क्षेत्र में राज्य स्तरीय एवं क्षेत्रीय भेदभाव को दूर करना एवं महिलाओं की भागीदारी बढ़ाने की ओर परिवर्तित करने पर बल दिया। इस संदर्भ में विभिन्न आयामों का जिक्र करते हुए उन्होंने कहा कि इन परिस्थितियों में इस प्रकार के सेमिनार की महत्वपूर्ण भूमिका है। उन्होंने आशा व्यक्त की कि इस दो दिवसीय सेमिनार में कौशल विकास, ग्रामीण भारत के सामाजिक व आर्थिक विकास, स्वस्थय एवं सम्पन्न भारत के लिए रणनीति तैयार की जायेगी तथा संगोष्ठी की संस्तुतियों को 'पंतनगर घ ोषणा' के रूप में लाया जायेगा।

डा. सुचिस्मिता सेनगुप्ता पाण्डे ने आजादी से पूर्व विज्ञान के विकास में पूर्व वैज्ञानिकों द्वारा किये गये महत्वपूर्ण योगदानों के बारे में बताया। उन्होंने कहा कि पराधीन भारत में विज्ञान भी पराधीन था, जिसमें अन्नामनी, विक्रम सारा भाई, आनन्दी बेन जोशी, स्वामी नाथन जैसे वैज्ञानिकों ने देश को विज्ञान के आधार प्रदान करने में महत्वपूर्ण योगदान दिया। अजादी के बाद हुए वैज्ञानिक विकास के बाद भी देश में बहुत विषमताए विद्यमान हैं। रिकार्ड अनाज उत्पादन के बाद भी किसान आत्म हत्या कर रहें हैं तथा कृषि उत्पादन सड़को पर फेका जा रहा है। उन्होंने युवा वैज्ञानिकों से भारतीय वैज्ञानिकों के इतिहास, उनके द्वारा ग्रामीण विकास व कृषि विकास में दिये गये योगदान को जानने का आह्वान किया तथा वर्तमान विषमताओं को दूर करने में सहयोग करने के लिए कहा। उन्होंने वैज्ञानिकों से खेतों पर जाने, स्थानीय फसलों एवं अनाजों की विशेषताओं को जानने, आपस में सहयोग करने तथा सभी की ऊर्जा को संगठित कर देश को सशक्त करने की ओर ले जाने के लिए कहा।

डा. रीता सिंह रघुवंशी ने अपने अध्यक्षीय संबोधन में भारत में गृह विज्ञान शिक्षा के विकास का इतिहास बताते हुए कहा कि गृह विज्ञान शिक्षा को अब सामुदायिक विज्ञान शिक्षा में परिवर्तित कर दिया गया है, जिससे यह समस्त समुदायों के सम्पूर्ण विकास में सहयोग कर सकती है जो समाज व देश के विकास में सहायक होंगे। उन्होंने इस संगोष्ठी के महत्व पर भी प्रकाश डाला तथा बताया कि यह संगोष्ठी स्थानीय लोगों, शिल्पीयों, वैज्ञानिकों, प्रसार कार्यकर्ताओं एवं उद्योगों के मध्य एक प्रभावी संचार स्थापित करेगा ताकि स्थानीय कला व शिल्प, परम्परागत स्थानीय खाद्यान्नों

का व्यवसायिक विकास एवं ग्रामीण लोगों की आय की वृद्धि हो सके। उन्होंने यह भी बताया की सेमिनार के सुझावों द्वारा रणनीतियां बनायी जायेंगी, ताकि ग्रामीण समस्याओं को हल किया जा सके और ग्रामीणजनों, वैज्ञानिकों व कृषि विज्ञान केन्द्रों के मध्य का अन्तर कम हो सके।

इसे पूर्व डा. साक्षी ने उपस्थित जनों का स्वागत करते हुए कार्यक्रम की रूप-रेखा से अवगत कराया और बताया कि दो-दिवसीय संगोष्ठी में चार सत्र होंगे जिनमें विभिन्न विशेषज्ञों द्वारा विभिन्न विषयों पर मौखिक व्याख्यान के साथ पोस्टर प्रदर्शित किये जायेंगे। इस दो-दिवसीय कार्यक्रम में देश के विभिन्न राज्यों यथा बिहार, झारखंड, रांची, उत्तर प्रदेश, उत्तराखण्ड, दिल्ली, पंजाब, हरियाणा, मध्य प्रदेश, राजस्थान, गुजरात, महराष्ट्र, तेलंगाना, कर्नाटक, ओडिशा, मेघालय, जम्मू एवं कश्मीर इत्यादि के विश्वविद्यालयों से वैज्ञानिक, विद्यार्थी, शोधार्थी, पेशेवर उद्यमी के साथ कृषि विज्ञान केन्द्र के वैज्ञानिक उपस्थित थे। कार्यक्रम का संचालन एवं धन्यवाद ज्ञापन डा. अनीता रानी द्वारा प्रस्तुत किया गया।

दीप प्रज्वलन कर संगोष्ठी का उद्घाटन करते डा. ए.पी. शर्मा, डा. सुचिस्मिता सेनगुप्ता पाण्डे एवं अन्य।